तीन चुड़ैलें

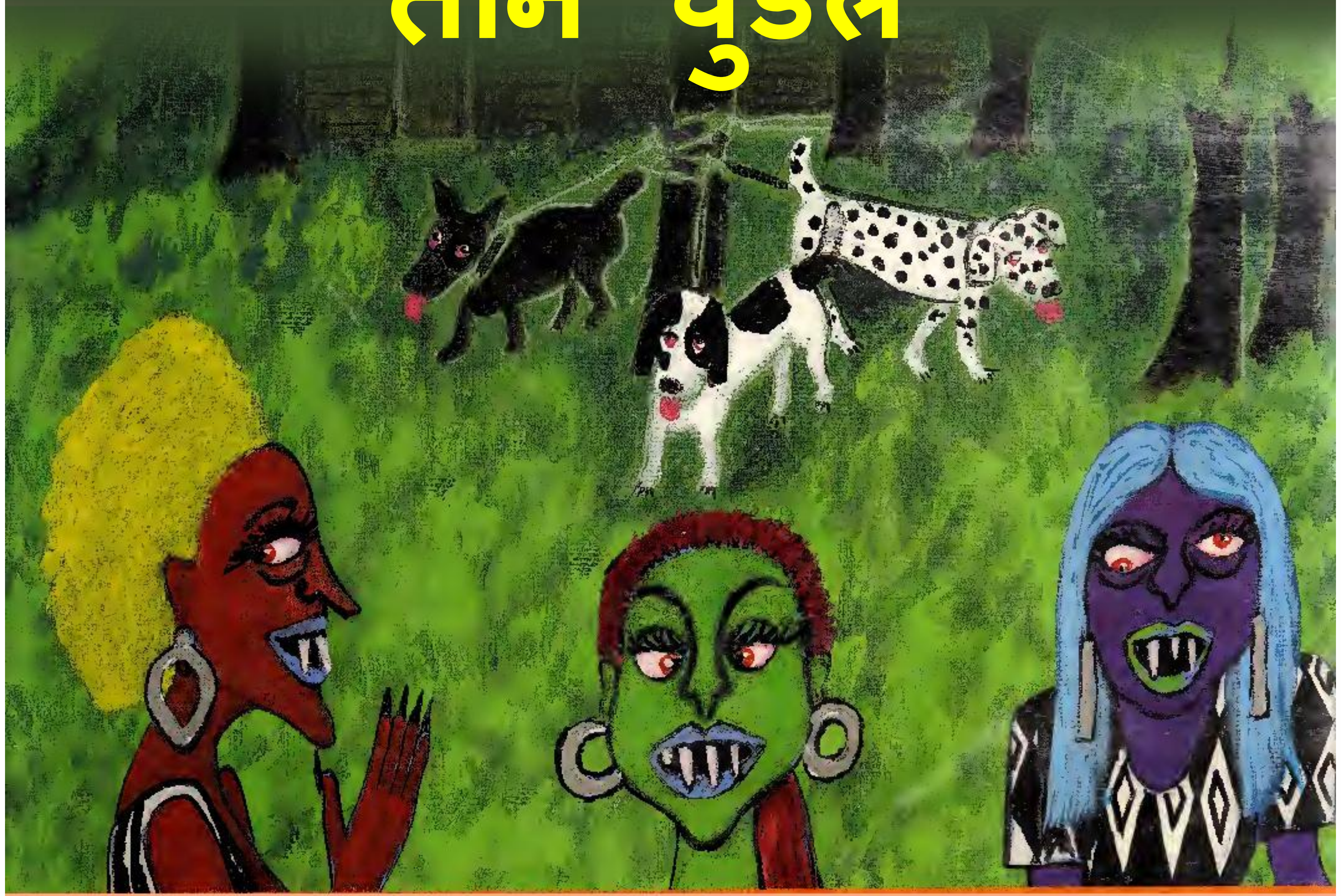

संकलनः ज़ोरा नील हस्टर्न, रूपान्तरः जॉयस कैरल थॉमस

चित्रः फेथ रिंग्गोल्ड, भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

तीन दुष्ट चुड़ैलें भूखी हैं। "चलो अपन इन बच्चों को खाते हैं," वे बोलीं। पर चाहे उनके दाँत उनके होठों से कितने ही बड़े क्यों न हों, और वे ऊँची एड़ियों के जूते ही क्यों न पहने हों, वे दो होशियार बच्चों, उनकी दादी, तीन शिकारी कुत्तों और तेज़ दौड़ने वाले साँप के सामने जीत नहीं पातीं।

द थ्री विचेस् नाम की इस कहानी का प्रकाशन पहले ज़ोरा नील हस्टर्न की रचना *एवरी टंग गॉट टू कनफैस* के तीसरे खंड में हुआ था। इन कहानियों को ज़ोरा ने खाड़ी देशों के सफ़र के दौरान संकलित किया था। बच्चों के लिए इसका रूपान्तरण राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार से सम्मानित जॉयस कैरल थॉमस ने किया। इस किताब के जीवन्त चित्र अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फेथ रिंग्गोल्ड ने बनाए हैं।

तीन चुड़ैलें

संकलनः ज़ोरा नील हस्टर्न

रूपान्तरः जॉयस कैरल थॉमस

चित्रः फेथ रिंग्गोल्ड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

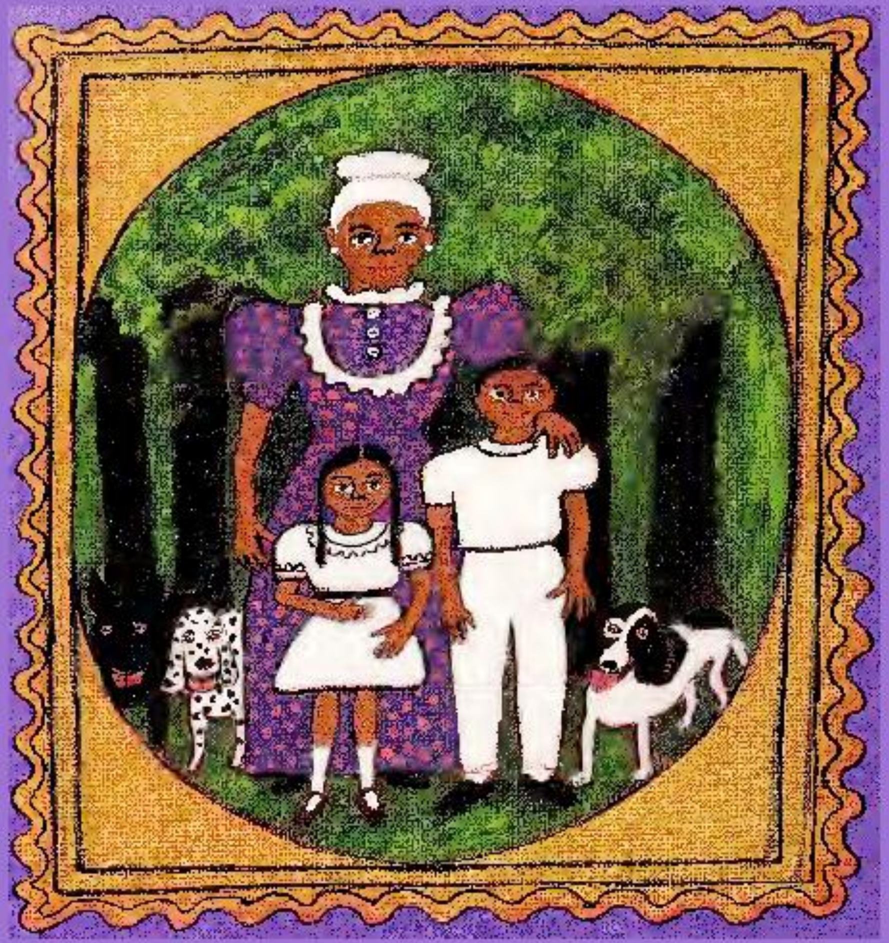

तीन दुष्ट चुडैलें, एक लड़की और लड़के के माँ बाप को पहले ही चट कर चुकी थीं। सो, उनकी दादी उन्हें दूर-दराज के जंगलों में अपने साथ रहने ले गईं।

दादी को बच्चों से बेहद प्यार था और वे भी दादी को खूब चाहते थे। वे दादी के साथ खुशी-खुशी अपना समय बिता रहे थे।

एक दिन दादी ने कहा, "हमारी रसोई की अलमारी खाली हो चुकी है। मैं बाज़ार जा कर खाने-पीने का सामान ले आती हूँ।" उन्होंने अपने झुके कंधों पर एक दुशाला लपेटा और बोलीं, "मैं शाम तक लौट आऊंगी।"

पर दादी बड़ी देर तक नहीं लौटीं। लड़के और लड़की को तेज़ भूख सताने लगी।

सो, लड़के ने कहा, "मैं तहख़ाने में जाकर देखता हूँ, शायद वहाँ कुछ खाने को मिले।"

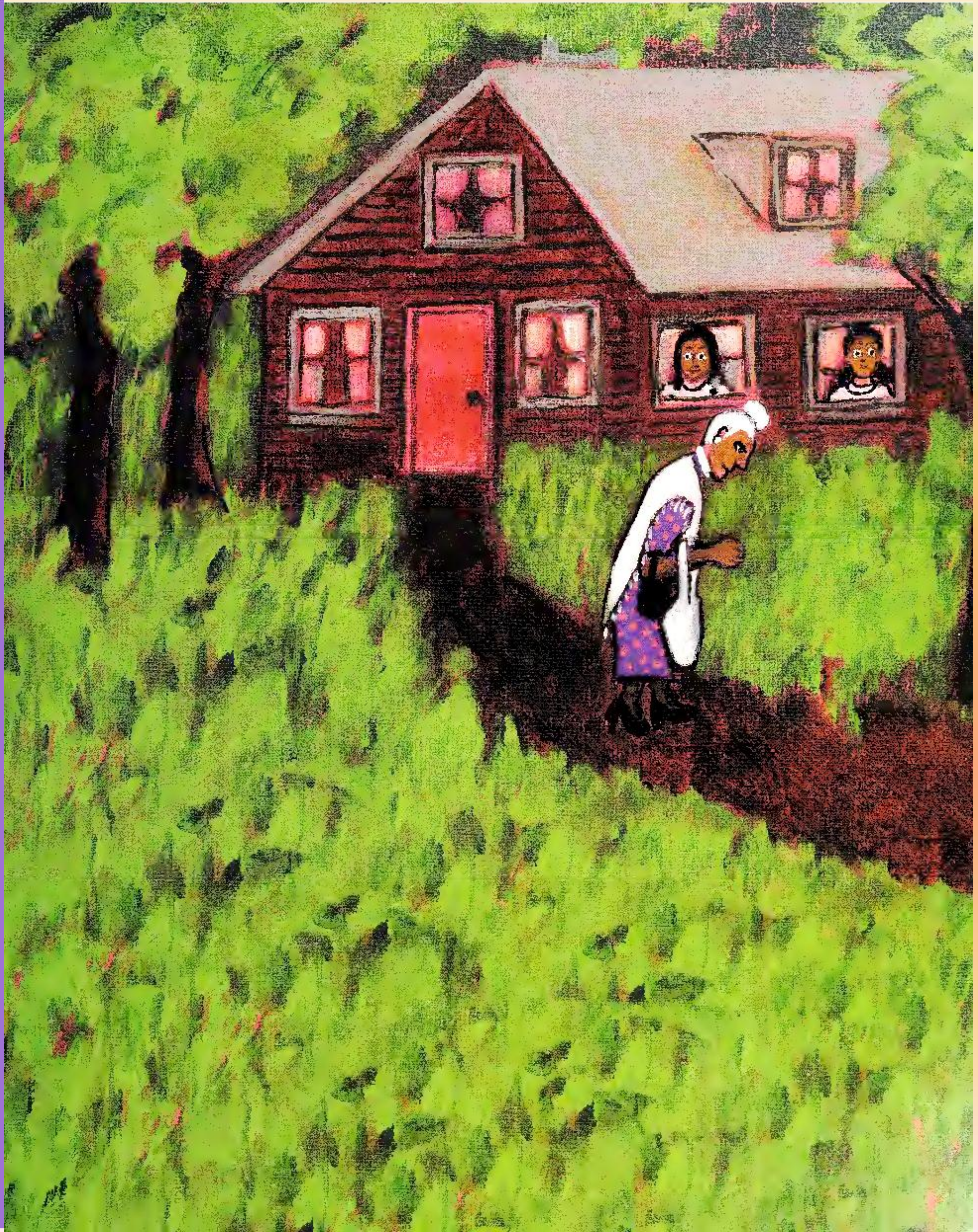

जब लड़का तहख़ाने से लौटा, उसने अपनी बहन को पूरे घर में चक्कर लगाते देखा। “क्या बात है?” उसने पूछा।

“मुझे चुडैलों की बू आ रही है,” बहन ने जवाब दिया

“अच्छी या बुरी चूडैलें?”

“बुरी!” बहन फुसफुसाई।

भाई घर भर में घूमा, पर उसे चुडैलें नहीं दिखीं। उसने बहन को वे ज़मींकंद दिखाए जो उसे तहख़ाने में मिले थे।

“मैं इन्हें भून देती हूँ,” कह बहन ने उन्हें अलाव में रखा।

जब वे भुन चुके तो भाई ने उन पर मक्खन लगाया।

“स्वादिष्ट,” दोनों ने खाते हुए कहा।

वे खा ही रहे थे कि अचानक चुडैलें आ पहुँची।

“चलो हम इन बच्चों को खाएं,” चुडैलों ने कहा।

“मेहरबानी से हमें मत खाइए,” बच्चों ने कहा, “हमारी दादी आती ही होंगी। वे आपको भरपेट खाना खिलाएंगी।”

“तुम्हारी दादी आएंगी कब?”

“सूरज ढलने तक,” लड़के ने जवाब दिया।

“ना, हम इतनी देर नहीं रुक सकते,” पहली चुडैल बोली।

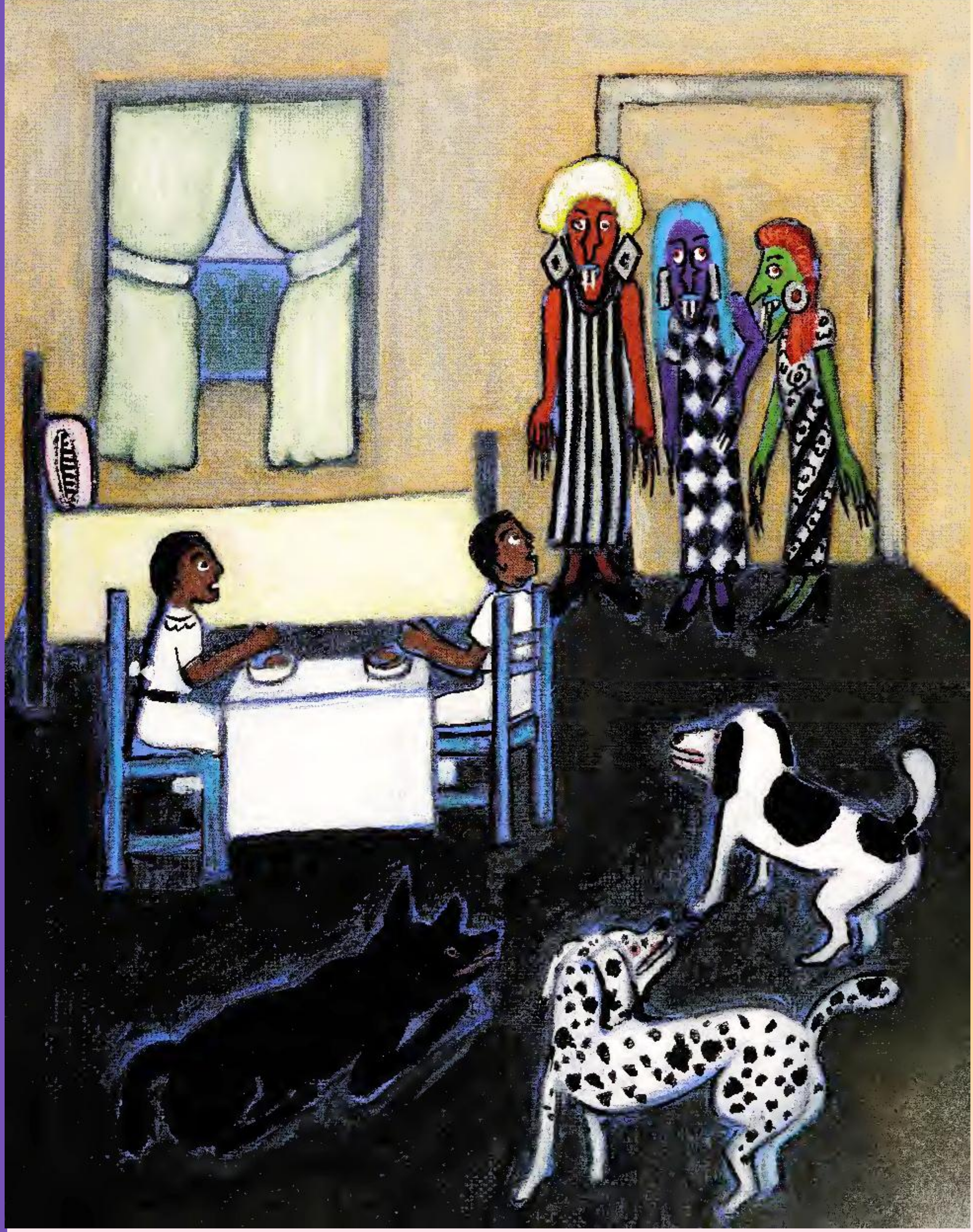

"हम तुम्हें नहीं खाएंगे अगर तुम लोग हमारा पेट भरने के लिए झरने का पानी ला दो," दूसरी चुडैल ने कहा।

"ठीक है," थरथर कांपते बच्चे बोले।

तीसरी चुडैल ने उन्हें पानी लाने के लिए एक बड़ी छन्नी दी।

"अगर तुम दोनों फौरन नहीं लौटे," तीनों चुडैलों ने कहा। "तो हम तुम दोनों को फौरन खा जाएंगे।

लड़का और लड़की पानी भरने झरने के पास गए।
उन्होंने छन्नी को पानी में डाला और ऊपर निकाला।
पर पानी तो भरा ही नहीं।
पानी उसके छेदों से बह जो जाता था।

आख़िरकार उन्हें तीनों चुडैलें आती दिखीं।
चुडैलें जिनके दाँत उनके होठों से बड़े थे।

लड़का और लड़की दोनों ही सहमे हुए थे।

लड़के ने बहन का हाथ पकड़ा और बोला, ''चलो अपन भाग निकलें। अगर हम गहरी नदी पार कर लेंगे, वे हमारा पीछा नहीं कर सकेंगी।''

बच्चे जितना तेज़ हो सकता था दौड़े।

उन्होंने तीनों चुडैलों को ऊँची एड़ी के जूतों के बावजूद इतनी तेज़ भागते देखा कि उनके पीछे उठते गुबार ने सूरज को ही ढ़क दिया।

लड़के को ठोकर लगी। वह गिरा। उसे और उसकी बहन को समझ आ गया कि वे चुडैलों के पहुँचने के पहले गहरी नदी तक नहीं जा पाएंगे, सो दोनों एक ऊँचे पेड़ पर जा छिपे।

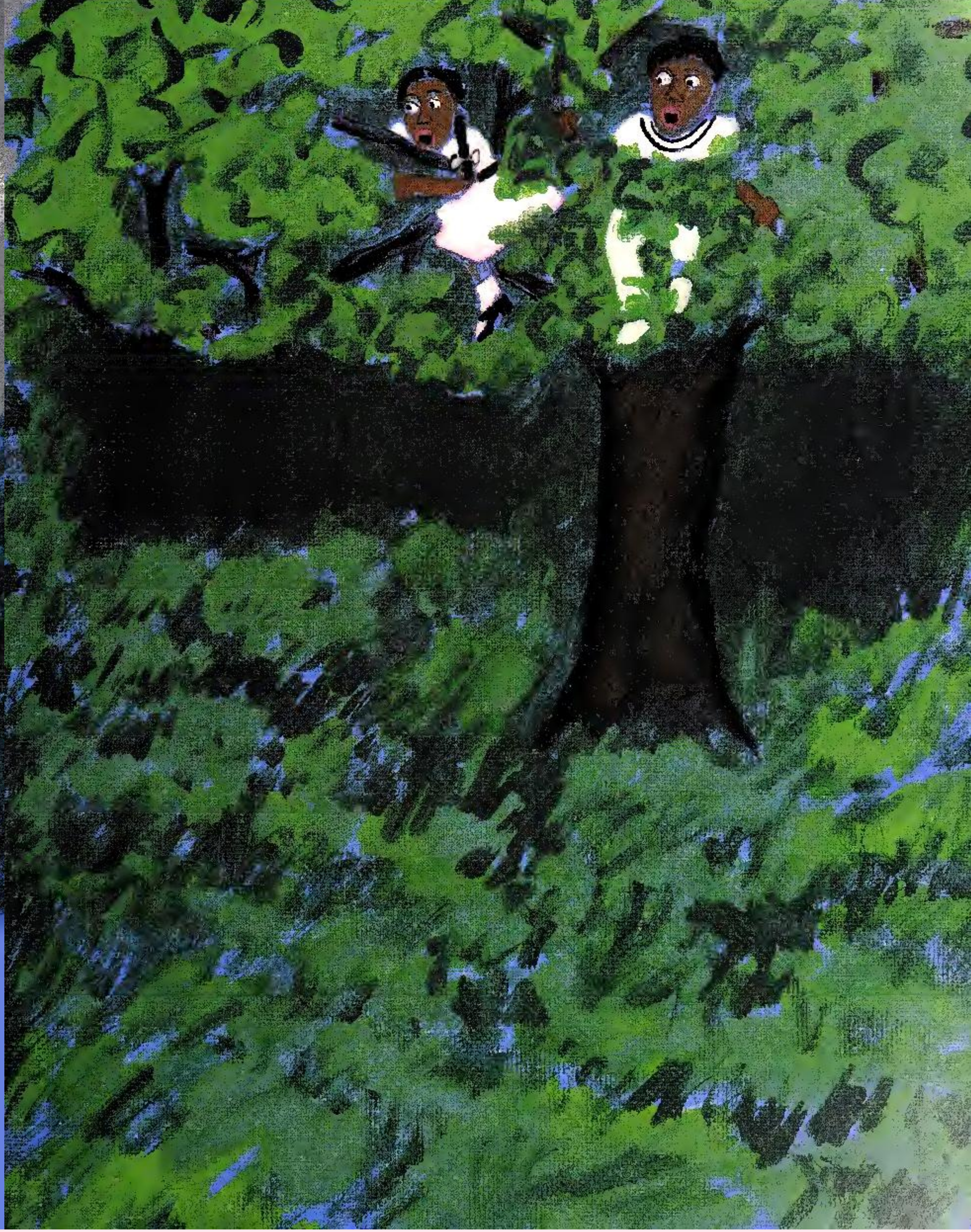

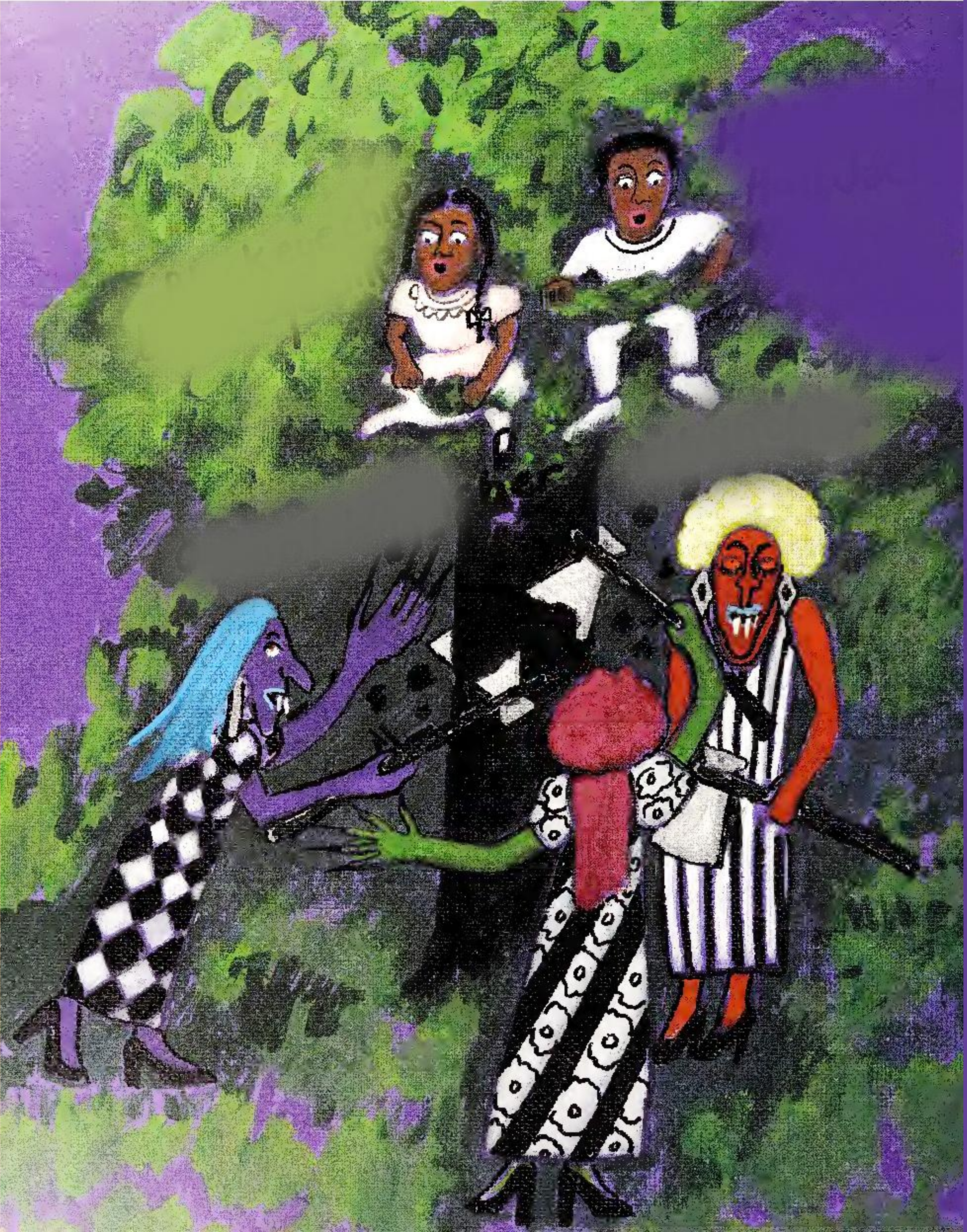

तीनों चुडैलें बच्चों के ख़ून की बू का पीछा करती, ठीक उसी पेड़ के नीचे आ पहुँची, जहाँ बच्चे छिपे थे। उन्होंने ऊपर देखा, और उन्हें बच्चे नज़र आ गए।

तीनों चुडैलों ने एक-एक धारदार कुल्हाड़ी उठाई और यह कहते पेड़ पर वार करने लगीं:

"हय्या हो! करें हम वार लकड़हारों-सा!

"हय्या हो! करें हम वार लकड़हारों-सा!

लड़की ने पलट कर कहा:

बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो उनकी आखों में जाकर।

बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो उनकी आखों में जाकर।

यह कहते ही कुल्हाड़ी के वार से बिखरने वाली खपच्चियाँ चुडैलों की आँखों में धंस उन्हें अंधा बनाने लगीं।

लड़के ने अपने तीनों शिकारी कुत्तों को आवाज़ लगाई:

आओ काउन्टर! आओ जैक! आओ हिकरी!

आओ काउन्टर! आओ जैक! आओ हिकरी!

और लड़की दोहराती रही, "बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो उनकी आखों में जाकर।"

अब तीन अंधी चुड़ैलें पेड़ के तने पर थीं,
अपनी तीन कुल्हाड़ियाँ घुमा रही थीं और पेड़ काट रही थीं।
“हय्या हो! करें हम वार लकड़हारों-सा!
“हय्या हो! करें हम वार लकड़हारों-सा!
और यह इसी तरह आगे-पीछे होता रहा.
लड़का कुत्तों को बुला रहा था
और अंधी चुड़ैलें पेड़ काट रही थीं
और लड़की मंत्रोच्चार कर रही थी।
"आओ, काउंटर! आओ जैक! आओ हिकरी!"
“हय्या हो! करें हम वार लकड़हारों-सा!
"बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो उनकी आखों में जाकर।"
पेड़ गिरने लगा था, और बच्चे बहुत, बहुत डरे हुए थे।
लेकिन लड़का पुकारता रहा -
"आओ, काउंटर! आओ जैक! आओ हिकरी!"
लड़की मंत्रोच्चार करती रही:
"बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो उनकी आखों में जाकर।"
चुडैलों को अब और कम दिखाई दे रहा था।
वे अंधी, और अंधी होती जा रही थीं।
पर वे फिर भी बोलती रहीं:
“हय्या हो! करें हम वार लकड़हारों-सा!

लड़की ने भाई से पूछा, "क्या तुम्हें कुत्ते आते नज़र आ रहे हैं?"

भाई ने कहा, "अब तक तो नहीं," वह और ज़ोर से चिल्लायाः

आओ काउन्टर! आओ जैक! आओ हिकरी!

पर उसे कुत्ते आते नज़र ही नहीं आए,
सो वह उदास हो गाने लगाः

"अकेले हैं हम यहाँ, हो चुके हैं गुम!"

पर लड़की ने हिम्मत न हारी, वह पूरी ताकत से दोहराती रहीः

"बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो उनकी आखों में जाकर।"

"बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो उनकी आखों में जाकर।"

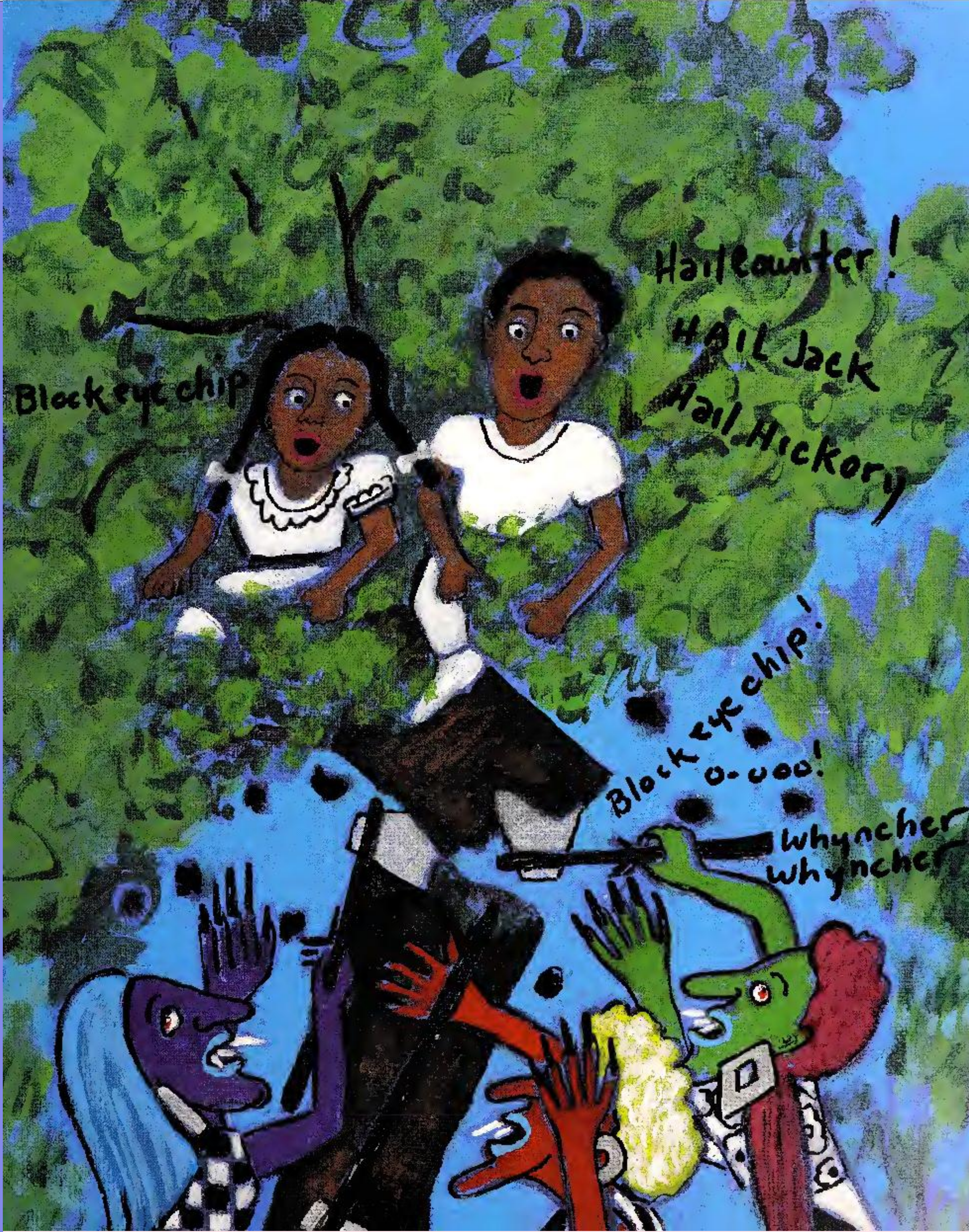

इधर दादी के घर में तीनों कुत्ते - काउन्टर, जैक और हिकरी - आंगन में बंधे हुए थे।

दादी एक बड़ा, भारी थैले में सौदा ले घर लौटीं। उन्हें ख़याल तो आया कि बच्चे आख़िर गए कहाँ हैं? पर थकी-हारी दादी गहरी नींद सो गई।

तीनों कुत्ते बच्चों की आवाज़ सुन छटपटा रहे थे। वे भाग कर मदद करना चाह रहे थे। पर वे बंधे थे।

और दादी, वह तो खर्राटे मार रही थी। उन्हें कुत्तों का भौंकना, परेशान हो मिमियाना, कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

पर एक काले-सफेद साँप ने बच्चों की आवाज़ सुनी। वह तेज़ी से दादी के घर तक आया और उनके मुँह पर फटाक से अपनी पूंछ मारी।

मुँह पर लगे थप्पड़ से दादी जाग पड़ी,
उसने कुत्तों को खोला।

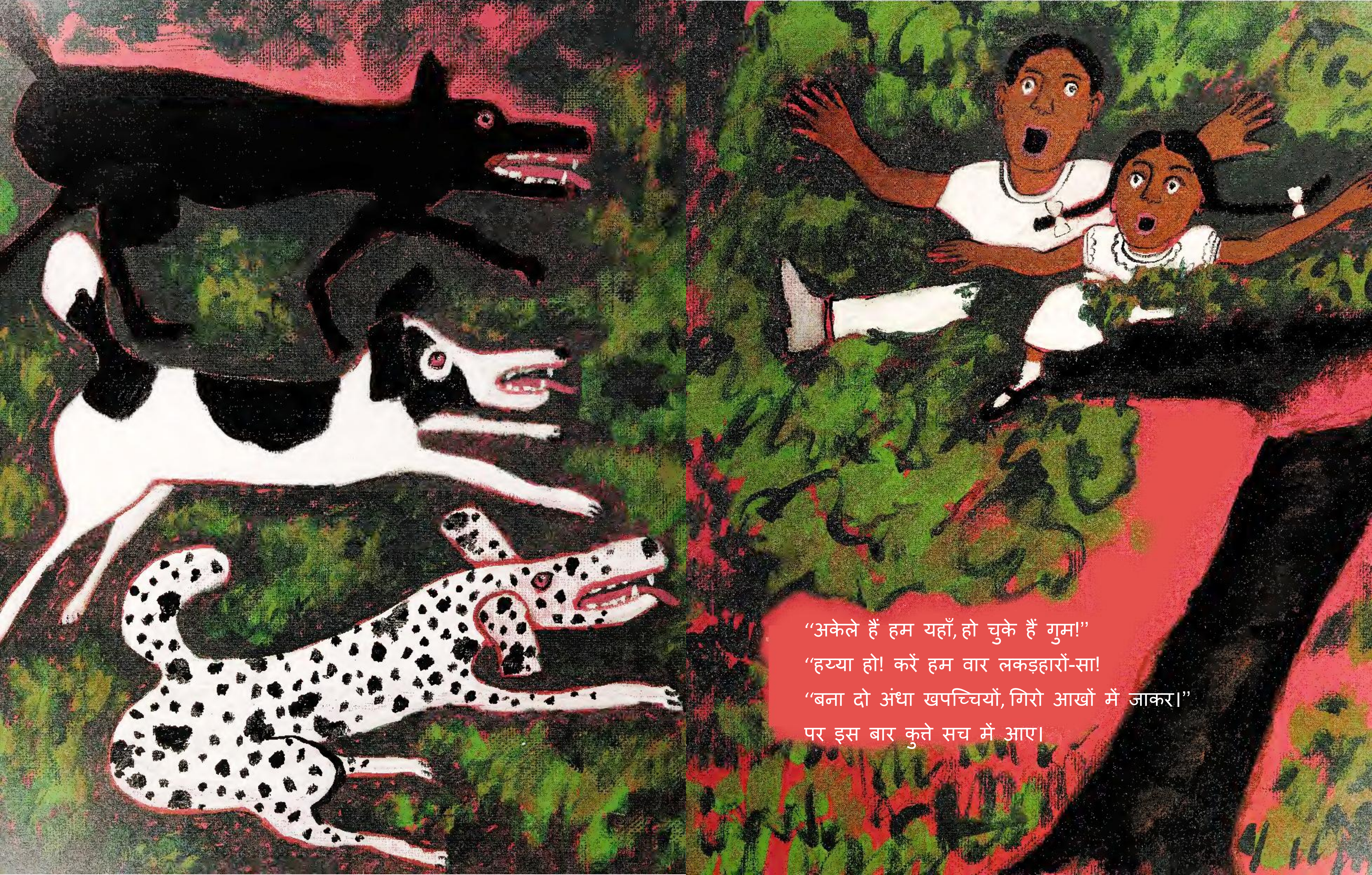

“अकेले हैं हम यहाँ, हो चुके हैं गुम!”
“हय्या हो! करें हम वार लकड़हारों-सा!
“बना दो अंधा खपच्चियों, गिरो आखों में जाकर।”
पर इस बार कुत्ते सच में आए।

पेड़ अब तक एक ओर झुक चुका था और लुढ़क कर गिरने ही वाला था। बच्चे भी तीनों चुडौलों की गिरफ्त के क़रीब आ चुके थे।

दोनों भाई-बहन कुत्तों को देख बेहद खुश हुए।

लड़के ने काउन्टर से कहा, "चुडैलों को मारो!"

लड़की जैक से बोली, "चूस लो उनका खून!"

दोनों ने हिकरी से कहा, "चबा जाओ इनकी हड्डियाँ!"

ठीक इसी वक्त मैं वहाँ से लौट आई।

रूपान्तरकार की कलम से

परेशानी इस बात से है कि अंधी चुडैलें पेड़ के तने पर वार करती जा रही हैं। ऐसी चुडैलें जिनके पैने दाँत उनके होठों से भी बड़े हैं, यह बात डरावनी होने के साथ थोड़ी मज़ाकिया भी है।

हमारे दिल की धड़कनें तब बढ़ जाती हैं जब हम अपने बिस्तर पर लेटे या मेज़ पर हंसते हुए लेटे/बैठे हैं और चुडैलें अचानक हमारा पीछा करने लगती हैं।

डरावनी जगहों के बारे में ज़ोरा नील हस्टर्न से ज़्यादा भला कौन जानता होगा।

और वे शिकारी कुत्ते जो हमें बचाने को बेताब हैं, अपनी रस्सियों की गिरफ्त से निकलने के लिए खींच-तान कर रहे हैं। इधर, थकी-मांदी दादी खर्राटे ले रही है। तब तक, जब तक दादी साँप की पूंछ के थपेड़े से जाग नहीं जाती, और तब बिस्तर से कूद कुत्तों को खोल नहीं देतीं।

ख़ैर, बच्चों अब मैं तीन अतिरिक्त ज़मीकंद भून कर रखा करूंगी, क्या पता चुडैलें यहाँ अचानक हाज़िर हो जाएं तब मैं उन्हें खिला सकूंगी।

- जॉयस कैरल थॉमस

चित्रकार की कलम से

मुझे इस क़िताब के चित्र बनाने में बहुत मज़ा आया। ज़ोरा नील हस्टर्न दुनिया भर में मेरी सबसे पसन्दीदा किस्सागो हैं। अगर कोई मुझसे पूछता कि मैं किसकी कहानी को चित्रित करना चाहूँगी (मेरी खुद की कहानियों के अलावा) तो मैं चीख कर कहती, ज़ोरा नील हस्टर्न की। क्योंकि वे कहानी को किसी भी अन्य लेखक से ज़्यादा कुशलता से बुनती हैं। इस बेशकीमती सपने को सच बनाने के लिए तुम्हें शुक्रिया, फीबी।

उनके विलक्षण शोध और संकलन के लिए हम ज़ोरा के शुक्रगुज़ार है। यह तय है कि उनकी दूरदृष्टि के बिना हम उनके संकलन में से कई कथाओं को खो देते। माया एंजलो की ही तरह, हमारी आज की कथा-गुरु में तीव्र बुद्धि, प्रतिभा व ऐसा आकर्षण है, जो हमें सदियों तक उनकी रचनाएं पढ़ने और हंसने को बाध्य करेगा।

जब मुझे हंसने की ज़रूरत होती है, या कोई मन-भावन काम मुझे खींचता नहीं, तो मैं ज़ोरा की टेप *ऑफ म्यूल्स् एण्ड मैंन* को सुनती हूँ, और मैं जहाँ कहीं भी होऊं, इतना हंसती हूँ जितना पहले कभी नहीं हंसी थी।

- फेथ रिंग्गोल्ड

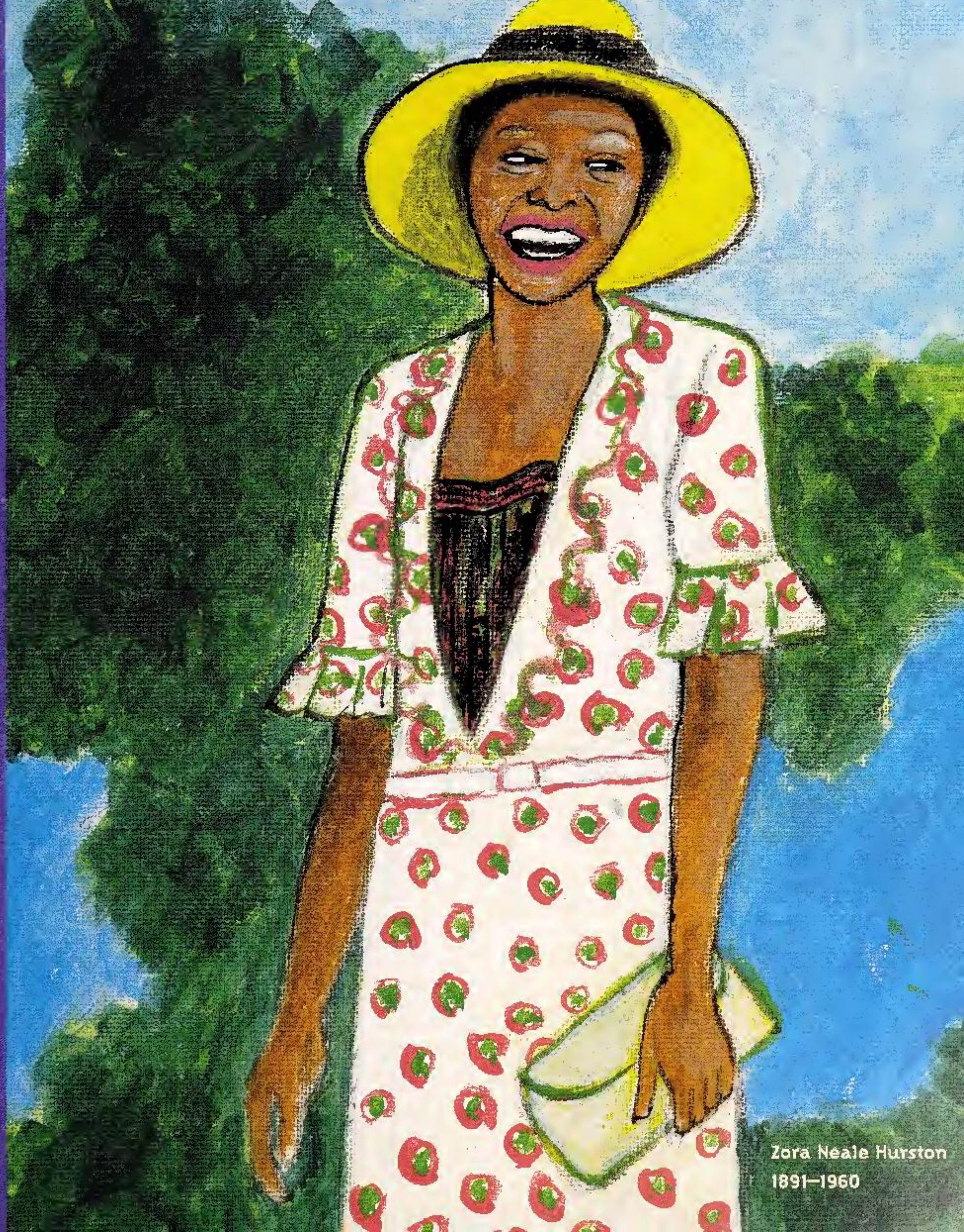

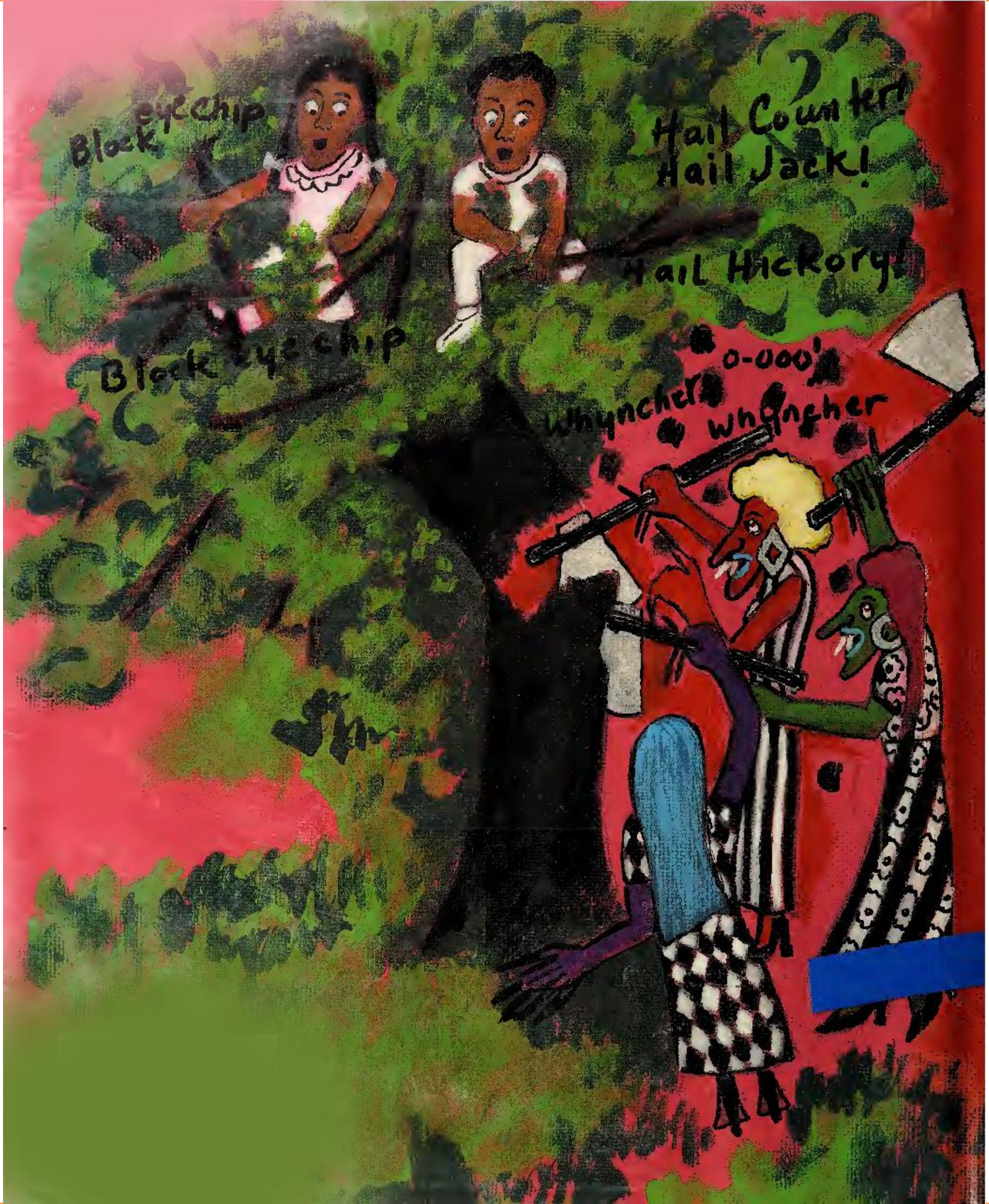
Black eye chip
Hail Counter!
Hail Jack!
Hail Hickory!
Black eye chip
o-ooo!
Whyncher
whyncher